डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

बी० ए० स्नातक सेमेस्टर - III

विषय - संस्कृत, MJC - III

वेदाङ्ग

'वेदाङ्ग' का अर्थ है - 'वेदस्य अङ्गानि' अर्थात् वेद के अंग। वे तत्व जिनसे किसी वस्तु के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होता है वे अंग कहलाते हैं। 'अङ्ग्यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अङ्गानि' भाव यह है कि वेदों के वास्तविक अर्थज्ञान के लिए जिन साधनों की आवश्यकता थी उन्हें वेदाङ्ग कहते थे। वेदाङ्ग सूत्र शैली में लिखे गये हैं। इनकी संख्या छः है।

1. शिक्षा 2. कल्प 3. व्याकरण 4. निरुक्त 5. छन्द 6. ज्योतिष

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः॥

महर्षि पाणिनि ने वेद पुरुष के अंगों का स्थान इस प्रकार माना है - 1. शिक्षा (घ्राण), 2. कल्प (हाथ), 3. व्याकरण (मुख), 4. निरुक्त (कान), 5. छन्द (पैर), और 6. ज्योतिष (नेत्र) -

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥

1. शिक्षा -

शिक्षा का व्युत्पत्ति परक अर्थ करते हुए सायणाचार्य ने लिखा है कि जिनके द्वारा हमें वैदिक मन्त्रों के

शुद्ध उच्चारण का ज्ञान होता है उसे 'शिक्षा' कहते हैं- 'स्वरवर्णाद्युच्चारण-प्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा"
(सायणाचार्य, ऋग्वेद भाष्य)

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है - वर्णों के उच्चारण की शिक्षा देना। वर्ण का उच्चारण स्थान, उनका प्रयत्न, संख्या, विभाजन, स्थान, स्वरों की संख्या, स्वरों का उच्चारण स्थान आदि की गणना शिक्षा के अन्तर्गत ही की जाती है। वेद के उच्चारण को शुद्ध रूप में करने के लिए स्वर-ज्ञान की आवश्यकता होती है। पाणिनि ने स्वरों का विभाजन तीन रूपों में किया है -(1) उच्चै-रुदात्तः, (2) नीचैरनुदात्तः, (3) समाहारः स्वरितः।

तैत्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा के ६: अंगों का वर्णन किया गया है- वर्णः, स्वरः, मात्रा, बलम्, साम, संतानः इत्युक्तः शिक्षाध्यायः।
(तै॰ उ॰ 1-2)

वर्ण-

संस्कृत वर्णमाला के 64 वर्णों का शुद्ध ज्ञान प्राप्त करना परम आवश्यक है।

स्वर-

उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित इन तीनों का ज्ञान मन्त्रज्ञान के लिए अनिवार्य है क्योंकि वेदों में

स्वर भेद से अर्थ का भेद हो जाता है।

मात्रा -

स्वरों के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहते हैं। इनमें ह्रस्व स्वर की ०१, दीर्घ स्वर की ०२ तथा प्लुत स्वर की ०३ मात्राएँ होती हैं।

बल -

वर्णों के उच्चारण में होने वाले प्रयत्न तथा उनके उच्चारण स्थान को 'बल' कहते हैं। उच्चारण स्थानों की संख्या ०८ हैं।

साम -

वर्णों का शुद्ध एवं सस्वर उच्चारण ही 'साम' कहलाता है। किसी वर्ण को किस प्रकार बोलना चाहिए, इसका ज्ञान साम से होता है।

संतान - संहितापाठ में प्रयुक्त शब्दों में सन्धि नियमों का पालन करना ही 'संतान' कहलाता है।

वेदों के प्रमुख शिक्षा ग्रन्थ -

वेद तथा शिक्षा ग्रन्थों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिक्षा ग्रन्थों में मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण के नियम दिए गये हैं। ऋग्वैदिक शिक्षा-ग्रन्थों में 'पाणिनीय शिक्षा' तथा यजुर्वेदीय शिक्षा ग्रन्थों में याज्ञवल्क्य शिक्षा, व्यास शिक्षा तथा अवसाननिर्णय शिक्षा ग्रन्थ प्रमुख हैं।

classmate

Date
Page

सामवेदीय शिक्षा ग्रन्थों में नारदीय शिक्षा तथा अथर्ववेदीय शिक्षा ग्रन्थों में माण्डूकी शिक्षा, शौनकीय चतुर-ध्यायिका प्रमुख शिक्षा ग्रन्थ हैं। इनके अतिरिक्त अन्य शिक्षा ग्रन्थ भी प्राप्त होते हैं, जैसे-व्यास शिक्षा, पाराशरी शिक्षा, कात्यायनी शिक्षा, केशवी शिक्षा, अमोघानन्दिनी शिक्षा, स्वरभक्ति-लक्षण शिक्षा, षोडश श्लोकी शिक्षा आदि। इन शिक्षा ग्रन्थों के अतिरिक्त कुछ शिक्षा सूत्र एवं शिक्षा प्राति-शाख्य ग्रन्थ भी प्राप्त होते हैं।